B.A. I भूगोल

(1) प्र० → अपवाह तंत्र के प्रकार एवं उनकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए

उ०→ अपवाह तन्त्र

धरातल के ऊपर जैसे ही किसी जल धारा का विकास होता है। वह अपनी घाटी के निर्माण मे लग जाती है।

1→ अनुवर्ती अपवाह → जब समुद्र के गर्भ से कोई स्थल खण्ड बाहर निकलता है तो उसका अपना एक मौलिक ढाल होता है। दूसरे शब्दो मे भूमि के प्रारम्भिक ढाल के अनुरूप बहने वाली जलधाराओ के अनुवर्ती अपवाह कहा जाता है।

2→ परवर्ती अपवाह → प्रारम्भिक ढाल के अनुरूप बहने वाली मुख्य नदी के दोनो किनारो पर वर्षा के कारण छोटी छोटी सहायक नदियाँ विकसित हो जाती है मुख्य नदी के दोनो किनारो पर दोनो दिशाओ मे बहकर आने वाली इन सहायक नदियों को ही परवर्ती अपवाह का नाम दिया है।

(3) प्रत्यानुवर्ती अपवाह → इस प्रकार के अपवाह की नदियाँ परवर्ती नदियों की ये परवर्ती धाराओ से समकोण पर मिलती है।

(4) अक्रमवर्ती अपवाह → इस प्रकार के अपवाह की नदियाँ न तो संरचना का अनुसरण करती है और न उपस्थित ढाल का ही ये किसी भी दिशा मे प्रवाहित हो सकती है। इनके द्वारा विकसित उपवाह तंत्र वृक्षसम होता है

(5) नवानुवर्ती अपवाह → अनुवर्ती धाराओं की दिशा में बहने वाली नवीन जल धारा को नवानुवर्ती अपवाह कहा जाता है।

(6) पुर्ववर्ती अपवाह → जब कभी किसी नदी के मार्ग में कोई स्थल भाग भू संचलन अथवा लावा के अन्तर्वेधन द्वारा ऊपर उठ जाता है। इस प्रकार जब कोई नदी निम्न उत्पन्न करने वाली शक्तियों के तीव्र प्रभाव के विपरीत अपने मार्ग को बनाये रखने में सफल होती है तो उसे पुर्ववर्ती अपवाह कहा जाता है।

(7) अध्यारोपित अपवाह → पृथ्वी की हलचलों के कारण कई बार नदियाँ निम्न के नीचे पुर्णतया दब जाती है। इस प्रकार निम्न के ऊपर बहने वाली नवीन नदियों को ही अध्यारोपित अपवाह कहा जाता है।

अपवाह प्रतिरूप

कुछ महत्वपूर्ण अपवाह प्रतिरूप निम्न है।

(1) आकृतिक प्रणाली → जब सहायक नदियाँ अलग अलग दिशाओं से आकर मुख्य नदी में मिलती है तो अपवाह एक वृक्ष के समान होता है। इस प्रकार की प्रणाली के अन्तर्गत भारत के गंगा गोदावरी कृष्णा आदि नदियों की प्रणालियाँ है।

जालाकृत प्रणाली → यह प्रणाली अधिकांश ऐसी रचना के प्रदेश में पायी जाती जहाँ कोमल और कठोर चट्टानें साथ-साथ पायी मिलती है।

जैसे → परवर्ती नदी और इसमे दोनो दिशाओं से आकर मिलने वाली प्रत्यानुवर्ती शाखाएँ और नवानुवर्ती नदियाँ इस प्रणाली के उदाहरण हिमालय प्रदेशीय मोड़दार पर्वतीय भागो से अधिक है।

अरीय प्रणाली → गुम्बदाकर अथवा ज्वालामुखी जैसे उत्क्षेप्त स्थलाकृतियाँ इस प्रकार की प्रणाली को जन्म देती है

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया